अन्तरा-शब्दशक्ति

प्रकृति के रंग बच्चों के संग

बाल गीत संग्रह

डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

प्रकृति के रंग, बच्चों के संग

(बाल गीत संग्रह)

डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-72-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
मूल्य- ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
PRAKRITI KE RANG BACCHON KE SANG BY DR. MANORAMA GUPTA
वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

अध्याय-एक

1. 'प्रकृति के रंग, बच्चों के संग'
2. कोयल
3. गौरैया
4. एक संदेश बच्चों के नाम
5. सूरज मामा
6. सीख-बच्चों का चाँद से वार्तालाप
7. तारे-सितारे
8. पर्वत राजा
9. नदियाँ
10. अगर वृक्ष न होते
11. प्रकृति के जीवन जंतु
12. थलचर जीव
13. हमारे पालतू पशु
    - गाय हमारी माता
    - भैंस महारानी
    - बकरी
    - घोड़ा होशियार
    - कुत्ता वफादार
    - बिल्ली मौसी
14. हमारे जंगली पशु
    - शेर
    - हाथी
15. हमारे जलचर जीव
    - मछली
    - मगरमच्छ
    - मेंढक
    - कछुआ

अध्याय दो
विश्व प्रसिद्ध, हिन्दी भाषा अक्षर ज्ञान

1. हिन्दी 'स्वर' अक्षर ज्ञान
2. हिन्दी व्यंजन अक्षरज्ञान
3. विश्व के गौरव विलुप्त होते हिंदी अंक
4. हिन्दी की दुनिया (पहाड़े)

''प्रकृति के रंग, बच्चों के संग''

ज्ञान के अथाह सागर से कुछ मोती बटोरकर, उन्हें शब्दों रूपी धागे में पिरोकर, आकर्शक, मुक्तामाल बनाने का प्रयास किया है। विकास की ओर बढ़ते कदमों एवं आधुनिक सभ्यता के भौतिक सुख साधनों को संग्रहित करने की चाह में व्यस्त परिवारों के अभिभावको के पास अपने नन्हे मुन्नों को दुलारने उनसे वार्तालाप करने का समयाभाव हो गया है। उनके चंचल मन में उठने वाले सवालों का जबाव देना, उन्हें प्रकृति के समीप लाना, अथवा अपनी भारतीय संस्कृति व सभ्यता से अवगत कराना शायद उनके लिए दुश्कर कार्य है। मैंने इस काव्य संग्रह के माध्यम से बाल गोपालों को प्रकृति से जोड़ने एवं विलुप्त होती भारतीय संस्कृति के गौरवमय अंकों एवं अक्षरों को मनोरंजक तरीके से उनके मानस पटल में अंकित कराने का लघुतम प्रयास किया है।

साहित्य जगत को समर्पित मेरी इस मौलिक रचना के पात्रों का चयन प्रकृति से करके बाल सुलभ ज्ञानवर्द्धक बातचीत के रूप में प्रस्तुत किया है। बस यही कामना है कि पाठकों को समर्पित यह बिन्दुतुल्य काव्य संग्रह उनके हृदयों में अपनी जगह बना सका तो मेरी लेखनी धन्य हो जायेगी और अबाध गति से साहित्य पथ पर गमन कर सकेगी।

आपके आशीष की शुभाकांक्षी
डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
'रमा-रमेश' जबलपुर (म.प्र.)

अध्याय-एक
‘प्रकृति के रंग, बच्चों के संग’

कोयल

श्याम रंग की होती कोयल,
डाल-डाल पर बैठे पल-पल,
जब आम में बौरें आती,
कोयल गाती खुश हो जाती,
कुहु-कुहु के गीत सुनाती ।

सबके मन को खूब लुभाती,
कौये कोयल है एक समान,
जन-जन को मोहे मीठी गान,
बच्चों तुम भी मीठा बोलो।

अपने स्वर में मिसरी घोलो,
रूप रंग न बनाये महान,
सत्कर्मो से ही बढ़ती शान ।।

गौरैया

नजर नहीं आती गौरैया।
नन्हीं सी तुम प्यारी चिड़िया।।
बड़े सबेरे दादी, नानी
बिखराती दाने, रखती पानी।।

झट से दाने तुम चुग लेती,
पानी सकोरे का भी पीती,
पर अब चूँ-चूँ नहीं सुनाती,
न ही छत मुंडेर में आती।

क्यों रूठ गयी गौरैया रानी,
अब छोड़ो अपनी मनमानी,
बच्चों, मैंने जिद नहीं ठानी,
दूषित हुई हवा और पानी।।

घर आँगन में पेड़ लगाओ,
धरती को तुम स्वर्ग बनाओ,
जागो बच्चों और जगाओ।
सबको ये संकल्प दिलाओ ।।

एक संदेश बच्चों के नाम

प्यारे बच्चों रखना ध्यान।
ईश्वर को तुम करो प्रणाम ।
जिसने बनाये सूरज चाँद।।
मात-पिता, गुरू देते ज्ञान।
सदैव देना उनको सम्मान।।

प्यारे बच्चों तुम,
यदि भरना है ऊँची उड़ान ।
पढ़-लिख सीखो कौशल ज्ञान ।।
यदि बनना है नेक इंसान ।
करना सब धर्म जाति का मान ।।

प्यारे बच्चों तुम,
अगर विपत्तियाँ आये पथ में,
बन जाना चट्टानों के समान।
मत करना जीवन में ऐसे काम,
झुके शीश हो राष्ट्र अपमान ।।

प्यारे बच्चों तुम।।

सूरज मामा

'सूरजा मामा, सूरज मामा' पास नहीं क्यों आते हो।
दूर-दूर रहकर क्यों तुम सबका मन ललचाते हो।।
नारंगी, पीले, लाल-लाल तुम, सबके मन को भाते हो।
मौसम्बी जैसे गोल-गोल आकाश में दौड़ जाते हो।।

पर्वत पेड़ों से झाँक-झाँक कर, तुम बच्चों को बहलाते हो ।
लगता है हमको साथ-साथ, हर जगह हमारे जाते हो ।।
चमकीले से सुंदर-सुंदर, जग को उजियारा देते हो ।
पूरब से आते सुबह-सुबह सबकी निंदिया ले जाते हो ।।

दादी कहती जागो-जागो, प्यारे मामा तुम्हें जगाते हैं।
कौआ बोला काँव-काँव, पीहू हम तुम्हें उठाते हैं।।
कहती है मम्मी झूठ-झूठ, मीलों दूर तुम रहते हो।
लेकिन तुम तो पास-पास, हाथ नहीं क्यों आते हो।।

लगते हो कितने प्यारे-प्यारे, नीचे आकर छिप जाते हो।
काम तुम्हारे सब न्यारे-न्यारे, संदेश कई दे जाते हो ।।
खुद तपकर होते गरम-गरम, पर हमें रोशनी देते हो।
धरती का पानी सोख-सोख, मेघो से वर्षा करवाते हो ।।

तुम को करते हम नमन-नमन, हाथ जोड़कर शीश झुकाकर ।
तुम जैसे परोपकारी बने, सब देना वरदान हमें कृपा कर।।

सीख-बच्चों का चाँद से वार्तालाप

चँदा-मामा, चँदा मामा, कितने सुंदर लगते हो।
गोल-गोल, सफेद चमकीले सबका मन हर लेते हो।।

रोज रात को आते मामा, दिन में क्यों छिप जाते हो।
क्या डरते सूरज मामा से हमें नहीं बतलाते हो ।।

नहीं-नहीं ओ प्यारे बच्चो, मैं दिन में थककर सोता हूँ।
फिर रात को रखवाली करता, जग को निंदिया देता हूँ।।

अच्छा बतलाओं न्यारे मामा, क्यों तुम घटते-बढ़ते हो।
कभी गोल थाली जैसे तो कभी काजू से दिखते हो ।।

चंदा बोला प्यारे बच्चों, तुमने सच्ची बात कहीं ।
अमावस तक घटता जाता, पूनम तक बढ़ता बात सही ।।

दूध, मलाई, मक्खन खाते इसीलिये हम बढ़ते हैं ।
तुम भी खाओ मेरे बच्चों सुंदर गोरे स्वस्थ बनते हैं ।।

फल सब्जियाँ नहीं खाता मैं, इसीलिये तो घटता हूँ ।
थे गलती तुम मन करना बेटों, सच-सच तुमसे कहता हूँ ।।

तारे-सितारे

चम-चम, चम-चम, चमक रहे हैं आसमान में तारे ।
टिम-टिम, टिमटिम दमक रहे हैं चँदा संग सितारे ।।

एक दिन बोली कुहु गुड़िया, नील गगन में कितने तारे ।
जल्दी बतलाओ हमको नानी ये दिखते इतने सारे ।।

हँसकर बोला मैने उससे, हैं सिर में जितने बाल तुम्हारे ।
झूठ-झूठ क्यों कहती मुझसे, गिन सकते क्या बाल हमारे ।।

खिलखिला कर सिर हिलाया, अनगिनत है नभ में तारे ।
सूरज ढलते ही चाँद निकलता तब दिखते थे इतने सारे।।

इतने में पीहू ने पूछा, ध्रुव तारा किसको कहते हैं।
सप्तऋशि तारे बतलाओ कहाँ आकाश में रहते हैं ।।

चँद्रमा के आसपास जो, चमकीले से सात सितारे।
सप्तऋषि उनको ही कहते, हैं वे देवो को प्यारे।।

सप्तऋषि तारों से ऊपर, जो सबसे तेज चमकता है।
ध्रुव तारा उसको ही कहते, सबको प्यारा लगता है।।

पर्वत राजा

इतने ऊँचे लंबे चौड़े से, क्यों हो पर्वत राजा।
दौड़-दौड़ कर खेलेंगे हम, बस थोड़ा नीचे आजा।

मम्मी जब मुझको ढूंढेंगी, पत्थर के पीछे छिप जाऊँगा।
वीर सिपाही बनकर मैं भी, दुष्मन पर गोले बसाऊँगा।

अच्छा मेरे वीर सिपाही, गले लगाकर बतलाता हूँ।
इतना ऊँचा लम्बा चौड़ा, क्यों हूँ तुमको समझाता हूँ।

धरती माँ के वन्य जीव, मुझमें ही छिपकर रहते हैं।
गर्मी सर्दी बरसात में वे, अपनी रक्षा करते हैं।

मुझसे ही टकराकर बच्चों, बादल वर्षा करते हैं।
नदी तालाब कुंये खेत, इसके जल से भरते हैं।

अन्न पानी मिलता सबको, चहुँ ओर खुशहाली आती।
अपने रूप से खुश होता मैं, जब दुनिया जीवन पाती।

धन्यवाद! हे पर्वत राजा, हम बच्चे करें प्रणाम।
ऐसे ही बस करते रहना, आप हमारे अच्छे काम।

नदियाँ

कल-कल बहती नदियाँ रानी।
कहीं उथला कहीं गहरा पानी।

पर्वतों से गिरती निर्मल धारा।
प्यास बुझाता है जग सारा।।

मछली, मेढक, मगर का वास,
पूरी करती किसान की आस।।

हम कपड़े धोयें और नहायें
पानी में कचरा न फिकवायें।।

यदि जल दूषित हो जायेगा।
जल जीवों पर संकट आयेगा।

बच्चों, एक संकल्प तुम्हें करना है।
नदियों को प्रदूशणमुक्त बनाना है।

यदि सूख जायेंगी नदियाँ सारी।
नहीं बचेगी फिर दुनिया हमारी।

अगर वृक्ष न होते

वृक्ष हमारे बहुउपयोगी, हमको जीवन देते हैं।
प्राण वायु मिलती है इनसे, कार्बन डाई आक्साइड लेते हैं।

खिड़की दरवाजे फर्नीचर घर के, पेड़ों से ही बनते हैं।
घर आफिस, कृषि कार्य में लकड़ी का प्रयोग हम करते हैं।

अनाज, फल-फूल, वस्त्र हमें पेड़ों से ही मिलते।
पेपर, खेल संगीत साज, सब इनसे ही बनते।

कोई अस्तित्व नहीं जीवों का, अगर वृक्ष न होते।
सोचो प्यारे नन्हे बच्चों, कैसे खाते पीते सोते।।

सब जीवों के खातिर बच्चों पौधे अवश्य लगाओ।
जन्म, विवाह, मृत्यु- दिवस, जब भी तुम मनाओ।

प्रकृति के जीवन जंतु

(अ) थलचर जीव-

जो जीव धरती पर रहते, उनको थलचर जीव कहते।
प्रायः ये चौपाया ही रहते, धरती में ही चलते फिरते।
इन सबको स्वतंत्र घूमने देना, इनके कष्टो को हर लेना।
ये है धरती माँ की शान, कभी न लेना इनकी जान।।

(ब) जलचर जीव-

जीव जंतु ये पानी में रहते, इनको जलचर जीव कहते।
ये प्रकृति में संतुलन बनाते, पानी की अशुद्धियाँ मिटाते।।
बाटल, पन्नी मत पानी में फेंको, जलदूषित होने से रोको।
लुप्त हो गयी अनेक प्रजातियाँ, बहाने से केमिकल की मूर्तियाँ।।

(स) नभचर जीव-

नभचर जीव उनको कहते। जो आकाश में ही उड़ते ।
होते हैं ये सब पंखधारी, पक्षी, पंछी बोले नर-नारी।।
कुछ ऊँची उड़ान भी भरते, कुछ वृक्षों तक ही उड़ बैठते।
पक्षी राजा गरूड़ कहलाता, मोर नाचकर मन बहलाता।।

जागो ! बच्चो, जागो!
धरती का सौंदर्य संवारो। जीव जंतु का जीवन बचालो।
सभी गंदगी दूर हटाओ। धूल, धुंये से मुक्ति पाओ।।

थलचर जीव

पालतू पशु, जंगली पशु,
जिन्हें हम घरों में रखते,
उनको पालतु पशु कहते ।।

ये सब शाकाहारी ही होते,
बस घास पूस पत्तियाँ खाते।
कभी अनाज चने भी खाते,
नहीं कभी ये हमें काटते।।

बच्चों इनसे करना प्यार,
ये कहलाते अपने ही यार।
यदि पालें हम अपने पास,
साथी बनकर देते हैं,
साथ घने जंगल में इनका बास।।

नहीं जाना तुम इनके पास,
जीव जंतु पकड़कर ले जाते।
चीर-फाड़कर ये उन को खाते।
ये मांसाहारी खंखार कहलाते।।

बड़े पशु, छोटो को खाने जाते।
शेर, चीता और भालू हाथी।
बारह सिंगा, सियार साथी।।
बच्चों नहीं ये अपने यार।
पर है प्रकृति के उपहार।।

हमारे पालतू पशु

गाय हमारी माता

म्हाँ-म्हाँ, म्हाँ-म्हाँ, के स्वर में सुनलो गाय रंभाती।
अपने भारत देश में बच्चो यह 'गौमाता'' कहलाती।।

होती कई रंगों की लाल, सफेद, चितकबरी, काली।
आँखे, कान, सींग दो, लंबा मुँह, पूँछ बालों वाली।।

भूसा, खली, चुनी, चारा और ताजे हरे बूट भी खाती।
खूंटें रस्सी से बंधकर यह, गौशाला, परछी में सोती।।

पंचगव्य है, दूध, दही, मक्खन, मही, घी गुणकारी।
गौ मूत्र की औषधियों से, सब दूर हटे, महामारी।।

बच्चों इसका तो गोबर भी होता अति उपयोगी।
कंडे खाद बनाते, इससे जो खेती में सहयोगी।।

ऐसी कामधेनू को तुम सब, घरों में पालो भाई।
सुख समृद्धि आरोग्य लिये यह स्वर्गलोक से आई।।

तैंतीस कोटि देवता इसमें, निवास करें दिन रात।
न मारेंगे, न काटेंगे बोलो मिलकर सच्ची बात।।

वैदिक काल से ही भारत में होती गायों की पूजा।
भगवान कृष्णा को प्यारी, इससे गोपाल नाम दूजा।।

भैंस महारानी

इ- अड़ा, इ- अड़ा, यूँ करके बच्चों भैंस हे डिड़याती।
गर्दन तक पानी में घंटों, डूबी ही रह जाती।।

मोटी-मोटी, चिकनी-चिकनी चमड़ी इसकी काली।
चाहे बीन नगाड़े बजाओ, यह नहीं खिसकने वाली।।

चौपाया प्राणी है, यह भी, पूँछ है इसकी छोटी।
दो आँखे-कान, लंबा मुँह, भारी भरकम सी मोटी।।

विशालकाय डील-डौल है, पर चाल बड़ी मस्तानी।
बोरा भर-भर भूसा खाती, पीती बाल्टियों से पानी।।

गाढ़ा पौष्टिक दूध पिलाती, नहीं जग में कोई सानी।
डेयरी उद्योग की शान भैंस, है श्वेत क्रांति की रानी।।

हर प्राणी प्रकृति की शोभा, मत करना छेड़खानी।
सबको अपना साथी समझो, प्यारी गुड़िया रानी।।

बकरी

मैं-ऐं, मैं-ऐ के स्वर में बकरी है मिमियाती।
नन्हे-मुन्ने शिशुओं को, सुपाचक दूध पिलाती।।

दो कान झुके से दो आँखे, लंबे से मुँह की होती।
बकरे के दो सींग, बालों की दाढ़ी, इनकी आती।।

भूरी, सफेद, चितकबरी काली रंगों की यह भी होती।
चार पैर, छोटी सी पूँछ, मालिक के बिना है रोती ।।

पीपल की ताजी हरी पत्तियाँ, बड़े चाव से खाती।
घर आँगन की शीतल छाया इसके मन को भाती।।

दानव बनकर मानव इसकी, देवी को बलि चढ़ाता।
कहीं दावत के खातिर मासूम बकरे को काटा जाता ।।

प्रकृति के हैं जीव सभी, क्यों हमको दया नहीं आई।
प्रेम, अभय के पात्र सभी हैं, बंद करो दुश्कृत्य भाई।।

घोड़ा होशियार

हिन-हिन, हिन-हिन ‘‘स्वर में घोड़ा हिनहिनाया।
ऊँचा पूरा, हष्ट-पुष्ट यह चौपाया पशु कहलाया।।

वीर बहादुर, वफादार महाराजा के मन को भाता ।
युद्ध भूमि में चतुराई से, दुश्मनों से उन्हें बचाता।।

ऊँची नीची पथरीली राहों पर तेज भागता जाता ।।
बिना थके मालिक को अपनी मंजिल तक पहुँचाता।

ठंडा पानी, हरी घास प्रिय, देशी चने भी खाता।
खड़े-खड़े ही सो लेता, अस्तबल छोड़ न जाता।।

घोड़ी चढ़कर दूल्हे राजा, दुल्हन ब्याहने जायें।
कभी-कभी ये नाच दिखाये, जब मन में हरवायें।।

बग्घी, तांगे में भी ये घोड़े जोते जाते हैं।
हमेशा ही मनुश्य के स्वामिभक्त कहलाते है।

कुत्ता वफादार

भौं-भौं करके कुत्ता भौंका,
इसे देखकर चोर भी चैंका।
ले ये मीठे बिस्कुट खा लो,
लेकिन मेरी जान छोड़ दो।।

सुनकर वह बोला मानुस भाई,
नहीं करता मैं तुम सी बेवफाई।
जिसके घर की रोटी खाता,
रखवाली कर फर्ज निभाता।।

पुलिस विभाग से इसका नाता,
जासूसी कर अपराधी पकड़वाता।
गोद अगर तुम उन्हें खिलाओ,
बच्चो कपड़े, हाथ धोकर आओ।।

बिल्ली मौसी

म्याऊँ- म्याऊँ बिल्ली बोली।
दूध मलाई पर नीयत डोली।

मिचिर-मिचिर आँखें मिचकाती।
शेर की भी ये मौसी कहलाती।।

होती सफेद भूरी और काली।
हरी-पीली सी आँखे चमकीली।।

चूहे तोते को ये खा जाती।
दबे पाँवों से दौड़ लगाती।।

बड़े शौक से लोग पालते।
घर से चूहे दूर भगाते।

यह मालिक को करती प्यार।
मत करना इन पर अत्याचार।।

हमारे जंगली पशु

शेर

घने जंगलों में ये विचरते,
खंडहर खोह गुफा में रहते।

दिन भर सोते रात में जगते,
मानव, जंतु को शिकार करते।

ये जंगल के राजा कहलाते,
ताजा मांस शिकार कर खाते।

सबसे चालक, शक्तिशाली कहलायें,
इनकी दहाड़ से जंगल कप जाये।

पीले, सफेद शेर है अब दुर्लभ,
इन्हें बचाना हो गया असंभव।

अभ्यारण्य दे रहे है संरक्षण,
शासन रक्षा करता है प्रतिक्षण।

हाथी

विशालकाय जानवर है हाथी।
यह मानव जाति का साथी।

है बड़े काम की लंबी सूण्ड।
सब कुछ पकड़े हो चाहे दूर।।

यह सीधा शांत प्राणी कहलाता।
सर्कस में भी करतब दिखलाता।

राजाओं संग युद्ध भूमि में जाता।
दुश्मनों को सूण्ड से मार गिराता।।

महावत संग घरों में जाता,
बच्चों को सवारी भी करवाता।

अगर कभी गुस्सा आ जाता।
वश में मुश्किल से आ पाता।

हमारे जलचर जीव

मछली

ये है मछली, जल की रानी।
न करना बाहर लाकर नादानी।।

ये लाल हरी, और नीली, पीली।
काली सफेद सुंदर चमकीली।।

साफ-सफाई पानी की करती।
कीड़े मकौड़े काई भी खाती।।

है सीधी-सादी बड़ी सयानी,
यह जल की निर्मला रानी।।

व्हेल स्टारफिश मन बहलाती।
डॉलफिन समुद्री शान कहलाती।।

आओ मछली की जान बचायें।
इनको दाने रोज खिलायें।।

मगरमच्छ

मगरमच्छ है जल का राजा।
भारी भरकम सा मोटा ताजा।।

पानी में यह उत्पात मचाता।।
छोटे, बड़े जीवों को खा जाता।।

बड़ी-बड़ी नदियों में ही रहता।
गहरे पानी के अंदर बैठता।।

जल से बाहर शिकार ढूंढता।
बच्चों, मनुष्यों को घसीट ले जाता।।

इनके पास कभी मत जाना।।
नही छेड़ना और नहीं सताना।।

मेंढक

टर्र-टर्र यूँ मेंढक बोले।
डचक-उचक मिट्टी में डोले।।

गोल-गोल है इसकी आँखें।
चारों और यह इनसे झाके।।

हर मौसम में रंग बदलता।
वर्षा में हरा-हरा हो जाता।

गर्मी में भूरे रंग का दिखता।
मिट्टी के अंदर यह छिपता।।

ये खेती के मित्र कहलाते।

कीड़े मकोड़े सब चटकर जाते।।

कछुआ

कछुआ धीरे-धीरे ही चलता।
अपने पथ पर कभी न रूकता।

पत्थर जैसी है कठोर पीठ,
नहीं पसंद है इसको भीड़।

दिखता सुंदर सा डील-डौल है,
कई किलोग्राम इसकी तौल है।

यह पानी को शुद्ध बनाता।
कुंये तालाब नदी में रहता।।

कछुआ है समृद्धि का प्रतीक।
इनकी रक्षा करना भी ठीक।।

अध्याय दो
विश्व प्रसिद्ध, हिन्दी भाषा अक्षर ज्ञान

हिन्दी 'स्वर' अक्षर ज्ञान

आओ बच्चो तुम्हें करायें,हिन्दी भाषा का हम ज्ञान।
ये है अपने देश की भाषा, भारत माँ की हम संतान।।
'अ' अनार का, 'आ' आम का, दोनों देखो फलों के नाम।
'ई' इमली का 'ई- ईख का, ये खट्टे, मीठे का ज्ञान ये है,..
'उ' से उल्लू होता बच्चो, दूर दृश्टि का इसको ज्ञान।
'ऊ' ऊँट का बोलो बच्चो, ये है मरूस्थल की शान, ये है,..
'ए' एड़ी का रट लो कान्हा, ये है पूरे पैरों की जान।
'ऐ' ऐनक का होता पीहू,नानी की आँखों की शान, ये है,...
'ऋ' ऋषि का बोलो कुहु,ये भारत भूमि का मान ।
वेद पुराण और ग्रंथ लिखे, कहलाते हैं, ब्रम्ह समान, ये है,..
'ओ' ओखली का बोलो अनवी, ये कूटे मिर्च मसाले, धान।
''औ' और का सीखो प्रनवी, ये है मम्मी की पहचान।।
'अं' अंगूर खटमिट्ठे लगते, खाओ सूर्यम सुबहो शाम।
'अः'' दो बिन्दी का बोलो, ये है तेरह स्वरों के नाम।।

हिन्दी व्यंजन अक्षरज्ञान

'क' कमल तालाब में खिलता,
'क' वर्ग कंठ व्यंजन,
'ख' खरगोस का, तेज दौड़ता,
'ग' गणेश, बुद्धि के दाता।
'घ' घड़े में पानी ठंडाता।।
इंगा-चिंगा 'ड' बोलो श्रेयान, हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
'प' वर्ग तालुव्य व्यंजन,
'च' चम्च से दूध पिलाते।
'छ' छाता वर्षा धूप बचाते।
'ज' जहाज आकाश में उड़ता।

'झ' झंडा हवा में फहराता।
'ञ' इंया चिंया बोलो अरमान, हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
'ट' टमाटर सलाद का राजा ट वर्ग,
'ठ' ठठेरा नये बर्तन बनाना।
मूर्धन्य व्यंजन,
'ड' डमरू शिवजी ने बजाया।
'ढ' ढक्कन डिब्बे में लगाया।।
'ण' अणा फणी बोलो विहान। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
'त' वर्ग 'त' तरबूज पीहू को भाता।
दन्त्य व्यंजन 'थ' थर्मश ठंडा गरम रखता।
'द' दवात में स्याही भरते।।
'घ' धनुश श्री राम जी रखते।।
'न' नल आता पानी के काम, हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
'प' वर्ग - 'प' पतंग हवा में उड़ाते,
ओश्ठय व्यंजन 'फ' फल जो सेहत बनाते।
'ब' बकरी से दूध पाते,
'भ' भालु का नाच दिखाते।।
'म' मछली रानी जल की शान, हिन्दी भाषा का यह ज्ञान।। आओ-
'य' यज्ञ हवा शुद्ध बनाता, 'य' वर्ग।
'र' रस्सी सामान बांधता।
'ल' लड्डू गणपति को भाता।
'व' वन है औषधि के दाता।
'श' शक्कर मीठा की शान। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान।। आओ-
'स' सपेरा जो बीन बजाता।
'ष' षटकोण तारों को दिखाता।
'ह' हिरण की तेज छलांग।। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
'क्ष' क्षत्रिय शूरवीर कहलाता ।संयुक्त अक्षर,
'त्र' त्रिषूल लेती है माता।
'ज्ञ' ज्ञानी वेदों का ज्ञाता।
बच्चों पढ़ लिख बनो महान।। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
अन्य अक्षर 'ढ़' अढ़ा से पढ़ना-बढ़ना सीखो।

‘ड़’ अड़ा से उड़ना झड़ना सीखो।
ये भी आते भाषा में काम। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान। आओ-
उर्दू अक्षर ‘फ’ फातिमा सीखो आन्या।
ज़ ज़ावेद शुद्ध बोलों मान्या।
क़ से क़ाबिल समझो आन्शी।
ख़ से ख़ुशबू बोलो शान्वी।।
ये उर्दू भाषा के है मेहमान। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान।
आओ बच्चो तुमें कराये हिन्दी भाषा का यह ज्ञान।
ये है अपने देश की भाषा, भारत माँ की हम संतान।।

विश्व के गौरव विलुप्त होते हिंदी अंक

हिन्दी गिनती

1, 2, 3, 4 एक, दो, तीन, चार। बेटी बनो होशियार।।
5, 6, 7, 8 पाँच, छः, सात, आठ । याद करो अपना पाठ।।
9, 10, 11, 12 नौ, दस, ग्यारह, बारह। पियो मीठा दूध सारा।
13, 14, 15, 16 तेरह, चौदह, पंद्रह सोलह । खाओ मेवे थोड़ा-थोड़ा।।
17, 18, 19, 20 सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस। मात-पिता की लो आशीष।।

हिन्दी की दुनिया (पहाड़े)

एक, एकम एक, बच्चों माथा टेक।
एक दूने दो, रात को जल्दी सो।
एक तिया तीन, बजाओ मधुर बीन।
एक चौके चार, देश से करो प्यार।।
एक पंचे पाँच, सीखो बेटी नाच।
एक छैं:- छै, भारत माँ की जय।।
एक सत्ते सात, खेलों में देना मात।
एक अठ्ठे आठ, सीखो अपना पाठ।।
एक नवम नौ, आलस करे क्यों।
एक दहाम दस, खिलखिला कर हँस।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
जन्म	- 05 मई 1956
पिता-माता	- स्मृति शेष श्री चंद्रिका प्रसाद - सरोज मोर, कटनी
पति	- डॉ. रमेश गुप्ता, नशामुक्ति क्लीनिक
पुत्र-पुत्रवधु	- इंजी. सौरभ - इंजी. शुभ्रा
पुत्री	- इं. सोनिका - दामाद इं. सौरभ मांडल
बगिया के फुल	- सृष्टि, श्रीनिका, श्रेयान
शिक्षा	- पीएच.डी. (अर्थशास्त्र), एम.ए. हिन्दी आयुर्वेद रत्न
पद	- सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, केशरवानी महाविद्यालय
कार्य	- प्राचार्य- आदित्य वीमेन कॉलेज जबलपुर
सम्प्रति	- आजीवन सदस्य - हिन्दी लेखिका संघ, जबलपुर, गहोई बंधु मासिक पत्रिका, अखिल भारतीय वैश्य महासभा, अखिल भारतीय गहोई महिला सभा।
विधा	- लेख, कविता, निबंध, संस्मरण, कहानी, लघुकथा, रिपोर्ट्स आदि।
पता	- डॉ. रमेशचन्द्र गुप्ता, 250 दक्षिण मिलौनीगंज, पोस्ट आफिस गली, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क	- 2650060, मो. 9993253556, 9300109040
प्रकाशन	- महाविद्यालयीन शोध पत्र लेखन, लेख, कवितायें, कहानियाँ, रिपोर्ट्स संपादन - महाविद्यालय पत्रिका 'केसर' के स्वर्ण जयंती विशेषांक 'स्मारिका'। सह संपादन - महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका 'जागरण' 1975 से निरंतर अनेक पत्र-पत्रिकाओं समाचार पत्रों में रचनाओं निरंतर प्रकाशन

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-025-4
मूल्य- 60/-